प्रबोधन गीते

भाग - २

ज्ञान प्रबोधिनीच्या कार्यकर्त्यांव्यतिरिक्त अन्य कवी/कार्यकर्त्यांनी
रचलेल्या व प्रबोधिनीत गायल्या जाणाऱ्या गीतांचे संकलन

प्रबोधन गीते

भाग २

ज्ञान प्रबोधिनीच्या कार्यकर्त्यांव्यतिरिक्त अन्य कवी/कार्यकर्त्यांनी रचलेल्या व प्रबोधिनीत गायल्या जाणाऱ्या गीतांचे संकलन

ज्ञान प्रबोधिनी
५१०, सदाशिव पेठ,
पुणे ४११०३०

प्रकाशक
कार्यवाह, ज्ञान प्रबोधिनी
५१०, सदाशिव पेठ, पुणे - ४११ ०३०.

अक्षर जुळणी व मुद्रक
छात्र प्रबोधन
ज्ञान प्रबोधिनी, पुणे - ४११ ०३०.

प्रथम आवृत्ती – सौर माघ, शके १९३६/ फेब्रुवारी २०१५

पुनर्मुद्रण – १ – सौर चैत्र, शके १९३९/ मार्च २०१७

मूल्य ₹ ३०/-

या पुस्तकातील गीतांच्या सर्व ज्ञात-अज्ञात कवींचे आम्ही ऋणी आहोत.

प्रबोधन गीते भाग १ - ज्ञान प्रबोधिनीच्या कार्यकर्त्यांनी रचलेल्या स्फूर्तिगीतांचा संग्रह - मूल्य **₹**३०/-
भाग १ व भाग २ एकत्रित मूल्य **₹** ५०/-

अंतरंग...

१. राष्ट्रगौरव गान

१. आओ बच्चो तुम्हे दिखाएँ
२. चन्दन है इस देश की माटी
३. जय भारत वन्दे मातरम्...
४. यह कल-कल छल छल बहती
५. राष्ट्र की जय चेतना का
६. वेदमंत्राहून आम्हा वंद्य...
७. हे अखंड राष्ट्रपुरुष !

२. राष्ट्र अर्चना

८. आज तन-मन और जीवन
९. जननी जगन् मात की
१०. बने हम हिंद के योगी...
११. बलसागर भारत होवो
१२. मातृ-भू की मूर्ति मेरे
१३. हम करें राष्ट्र-आराधन
१४. हिंदुभूमि की हम संतान

३. प्रेरणा गीते

१५. आज एकदा पुन्हा...
१६. एकदिलाची सिंहगर्जना
१७. जय जय महाराष्ट्र माझा...
१८. जयोऽस्तुते
१९. ए मेरे वतन के लोगो
२०. ए वतन ए वतन...
२१. गलत मत कदम उठाओ
२२. गुंज उठी है हल्दी घाटी
२३. जाग उठा है आज देश का....
२४. नौजवान आओ रे
२५. मेरा रंग दे बसंती
२६. यशाने दुमदुमवू त्रिभुवने
२७. ये देश हैं वीर जवानों का
२८. ये वक्त की आवाज है
२९. सुन गम के तराने...

४. शिवरायांची गीते

३०. छत्रपती शिवरायांचा...
३१. दुंदुभी निनादल्या
३२. प्रभो शिवाजी राजा
३३. रणी फडकती....
३४. रायगडाच्या माथ्यावरुनी
३५. वेडात मराठे....
३६. शिवबाचे गोंधळी...
३७. शूर अम्ही सरदार....

५. संकल्प

३८. अब तक सुमनों पर चलते थे...
३९. असार जीवित...
४०. असु अम्ही सुखाने
४१. अविरत श्रमणे
४२. आम्ही भारतीय भगिनी
४३. कुणी कुणासंगं भांडायचं नाय...
४४. क्यों हिंदुबहादुर भूल गये ?
४५. जिसने मरना सीख लिया है
४६. टाक रं जरा नजर
४७. निर्माणों के पावन युग में
४८. म राष्ट्रमालिका का मोती
४९. हमारी ही मुठ्ठी में...
५०. होंगे कामयाब
५१. हृदय चाहिए
५२. There are numerous strings

६. ध्येयसाधना

५३. चल पडे पैर जिस ओर....
५४. चिर विजय की कामना
५५. तू जिंदा है तो
५६. दिव्य ध्येय की ओर तपस्वी
५७. ध्येयसाधना अमर रहे !
५८. नवीन पर्व के लिए...

५९. बढ रहे है हम निरन्तर
६०. मनसा सततं स्मरणीयम्
६१. मुक्त प्राणों में हमारे
६२. शपथ लेना तो सरल है
६३. साधना पथ पर बढे हम...
६४. सेवा है यज्ञकुंड...
७. प्रार्थना
६५. ॐ नमोऽस्तु ते ध्वजाय
६६. इतनी शक्ती हमें देना दाता
६७. ए मालिक तेरे बंदे हम....
६८. खरा तो एकचि धर्म
६९. चराचराच्या सर्व शक्तिंनो
७०. जय शारदे वागीश्वरी
७१. तुझ्या घरी आलो राया...
७२. देह मंदिर चित्त मंदिर
७३. निर्वाणषट्क
७४. मंदिर है ये हमारा..
७५. वंदना के इन स्वरों में...
७६. शुद्धी दे, बुद्धि दे
७७. संगच्छध्वं संवदध्वं
७८. सर्वात्मका शिवसुंदरा
७९. हमको मन की शक्ति देना...
८०. हर देश में तू
८१. This is my prayer to Thee

टीप : त्या त्या विभागांमध्ये गीतांचा क्रम अकारविल्हे लावलेला आहे. इंग्रजी गीते त्या गटात सर्वात शेवटी दिली आहेत.

भूमिका

प्रबोधन गीते–भाग १ मध्ये ज्ञान प्रबोधिनीतील कार्यकर्त्यांनी रचलेली गीते आहेत. या भाग २ मध्ये प्रबोधिनीत शिक्षण न घेतलेल्या आणि प्रबोधिनीत काम न करणाऱ्या इतर अनेक नव्या, जुन्या, प्रसिद्ध व अप्रसिद्ध कवींची गीते आहेत. त्यात रविंद्रनाथ ठाकूरांसारख्या महाकवींच्या बंगाली कवितांची इंग्रजी भाषांतरेही आहेत. तसेच अनेक अज्ञात कवींची मराठी व हिंदी गीतेही आहेत. काही गीते पूर्व प्रकाशित संग्रहांमधून कृतज्ञतापूर्वक घेतली आहेत. काहींचा स्रोत सांगणेही कठीण आहे. प्रबोधिनीच्या विद्यार्थ्यांनी व कार्यकर्त्यांनी अनेक वेळा म्हटलेली, त्यांना पुन्हा पुन्हा म्हणावीशी वाटणारी अशी गीते येथे संकलित केली आहेत.

या सर्व कवितांचे राष्ट्रभक्ती हे एकच सूत्र आहे. राष्ट्राचा गौरव वाढवण्यासाठी त्यागपूर्वक पराक्रमाची कृती आणि लोकसेवा करण्याचे संकल्प त्यामध्ये आहेत. या कृती करण्यासाठी स्वत:चे शरीर, मन व बुद्धि समर्थ करण्याच्या प्रार्थना त्यामध्ये आहेत. ही सर्वच गीते अंतर्मुख करणारी, प्रेरणादायी असल्याने कार्यकर्त्यांच्या सोयीसाठी या प्रबोधन गीते–भाग २ मध्ये त्यांचे संकलन केले आहे.

सौर माघ, शके १९३६ — गिरीश श्री. बापट
फेब्रुवारी २०१५ — संचालक, ज्ञान प्रबोधिनी

१. आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ

आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्थान की,
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की ।। ध्रु.।।
वंदे मातरम्... वंदे मातरम्
उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है
गंगाजी के तट को देखो, जमुना का यह घाट है
हाट हाट में, बाट बाट पे यहाँ निराला थाट है
देखो ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की ।। १।।
ये है अपना राजपुताना नाज इसे तलवारों पे
इसने सारा जीवन काटा बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला है, आझादी के नारों पे
कूद पडी थी यहाँ हजारों पद्मिनीयाँ अंगारो पे
बोल रही है कण कण से कुर्बानी राजस्थान की ।। २।।
देखो मुल्क मराठों का यह- यहाँ शिवाजी डोला था
मुगलों की ताकद को जिसने तलवारों पे तोला था
हर पर्वत पर आग लगी थी, हर पत्थर इक शोला था
बोली हर हर महादेव की बच्चा बच्चा बोला था
यही शिवाजी ने रख्खी थी लाज हमारे शान की ।। ३।।
जालीयाँवाला बाग ये देखो यही चली थी गोलियाँ
ये मत पूछो किसने खेली यहाँ खून की होलियाँ
एक तरफ बंदूक की दन दन एक तरफ थी गोलियाँ
मरनेवाले बोल रहे थे इन्किलाब की बोलियाँ
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाजी अपने जान की ।। ४।।
ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है
यहाँ का बच्चा बच्चा अपने देश पे मरनेवाला है
ढाला है इसको बिजली ने भूचालों ने पाला है
मुठ्ठी में तुफान बँधा है और प्राण में ज्वाला है
जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान की ।। ५।।

२. चन्दन है इस देश की माटी

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है।। ध्रु.।।

हर शरीर मन्दिर सा पावन, हर मानव उपकारी है,
जहाँ सिंह बन गये खिलौने, गाय जहाँ माँ प्यारी है।
जहाँ सबेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है।। १।।

जहाँ कर्म से भाग्य बदलते, श्रम निष्ठा कल्याणी है,
त्याग और तप की गाथाएँ, गाती कवि की वाणी है
ज्ञान यहाँ का गंगा जल सा, निर्मल है अविराम है।। २।।

इसके सैनिक समरभूमि में, गाया करते गीता है,
जहाँ खेत में हल के नीचे, खेला करती सीता है।
जीवन का आदर्श यहाँ हर, परमेश्वर का धाम है।। ३।।

३. जय भारत वन्दे मातरम्...

वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् ।
भारत वन्दे मातरम् जय भारत वन्दे मातरम् ।।
रुक ना पाये तूफानों में सबसे आगे बढे कदम ।
जीवन पुष्प चढाने निकले माता के चरणों में हम ।। ध्रु.।।

मस्तक पर हिमराज विराजित, उन्नत माथा माता का ।
चरण धो रहा विशाल सागर, देश यही सुंदरता का ।
हरियाली साडी पहने माँ, गीत तुम्हारे गाए हम ।। १।।

नदियन की मंगल माला है, पावन धारा गंगा की।
कमर बंध है विंध्याद्री का सातपुडा के श्रेणी की।
सह्याद्री का वज्रहस्त है, पौरुष को पहचाने हम ।। २।।

नहीं किसी के सामने हमने, अपना शीश झुकाया है।
जो हम से टकराने आया, माटी में मिल पाया है।
तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहे ।। ३।।

४. यह कल-कल छल छल बहती

यह कल-कल छल छल बहती, क्या कहती गंगा धारा।
युग युग से बहता आया, यह पुण्य प्रवाह हमारा।। ध्रु.।।

हम इसके लघुतम जलकण, बनते मिटते ह क्षण-क्षण।
अपना अस्तित्व मिटाकर, तन-मन-धन करते अर्पण।
बढ़ते जाने का शुभ प्रण, प्राणों से हमको प्यारा।। १।।

इस धारा में घुल-मिलकर, वीरों की राख बही है।
इस धारा में कितने ही, ऋषियों ने शरण गही है।
इस धारा की गोदी में, खेला इतिहास हमारा ।। २।।

यह अविरल तप का फल है, यह राष्ट्र प्रवाह प्रबल है।
शुभ संस्कृति का परिचायक, भारत माँ का आँचल है।
यह शाश्वत है चिर जीवन, मर्यादा धर्म सहारा ।। ३।।

क्या इसको रोक सकेंगे मिटने वाले मिट जायें।
कंकड़ पत्थर की हस्ती क्या बाधा बनकर आयें।
ढह जायेंगे गिरि पर्वत, काँपे भू-मण्डल सारा ।। ४।।

५. राष्ट्र की जय चेतना का...

राष्ट्र की जय चेतना का, गान वंदे मातरम् ।
राष्ट्रभक्ति प्रेरणा का, गान वंदे मातरम् ।।
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, वंदे मातरम् ।। ध्रु. ।।

वंशी के बहते स्वरोंका, गान वंदे मातरम् ।
झल्लरी झनकार झनके, नाद वंदे मातरम् ।।
शंख का संघोष चहुदिश, व्याप्त वंदे मातरम् ।। १।।

सृष्टी के बीजमंत्र का है, मर्म वंदे मातरम् ।
राम के वनवास का है, काव्य वंदे मातरम् ।।
दिव्य गीता ज्ञान का, संदेश वंदे मातरम् ।। २।।

हल्दी घाटी के कणों में, व्याप्त वंदे मातरम् ।
दिव्य जौहर ज्वाल का है, तेज वंदे मातरम् ।।
वीरों के बलिदान का, हुंकार वंदे मातरम् ।। ३।।

जन जन के हर कंठ का, हो गान वंदे मातरम् ।
अरिदल थरथर काँपे सुनकर, नाद वंदे मातरम् ।।
वीर पुत्रों की अमर, ललकार वंदे मातरम् ।। ४।।

६. वेदमंत्राहून आम्हा वंद्य वंदे मातरम्...

वेदमंत्रांहून आम्हां वंद्य वंदे मातरम्।। ध्रु.।।

माउलीच्या मुक्ततेचा यज्ञ झाला भारती
त्यात लाखो वीर देती जीवितांच्या आहुती
आहुतींनी सिद्ध केला मंत्र वंदे मातरम् ।। १।।

याच मंत्राने मृतांचे राष्ट्र सारे जागले
शस्त्रधारी निष्ठुरांशी शांतिवादी झुंजले
शस्त्रहीना एक लाभे शस्त्र वंदे मातरम् ।। २।।

निर्मिला हा मंत्र ज्यांनी आचरीला झुंजुनी
ते हुतात्मे देव झाले स्वर्गलोकी जाउनी
गा तयांच्या आरतीचे गीत वंदे मातरम् ।। ३।।

७. हे अखंड राष्ट्रपुरुष !

हे अखंड राष्ट्रपुरुष अमित शक्तिधारी।
कोटि कोटि कण्ठ करे वंदना तुम्हारी।। ध्रु.।।

हे विराट दिव्य देह अद्वितीय एकमेव।
सर्वगम्य तुम सदैव अशिवध्वंसकारी ।। १।।

शतसहस्र शीर्षवान लक्ष लक्ष द्रुम सुजान।
हे असंख्य भुज महान कोटि चरण चारी ।। २।।

एक देश एक वेश एक हृदय तव विशेष।
कोटि कोटि जिह्वशेष द्वेष क्लेश हारी।। ३।।

हे प्रबुद्ध प्राणवंत मरणभयविहीन संत।
तू प्रफुल्ल चिरवसंत तरुण वनविहारी।। ४।।

तुम पुराणपुरुष हिंदु तव निकेत सप्तसिंधु।
भरतखंड मानबिंदु म्लेंच्छदमनकारी।। ५।।

मम अजेय विश्वभूप तव हिमाद्रि मुकुट रूप
रत्नहार कलअनूप गंग-यमुन वारी ।। ६।।

बीत चले युग-युगान्त किंतु तुम प्रसुप्त शांत
बन कराल हे कृतान्त कठिन नृत्यकारी ।। ७।।

जाग महाभाग जाग सुन प्रचंड असुर राग
खोल नयन बरस आग बन भुजंगधारी ।। ८।।

८. आज तन-मन और जीवन

आज तन-मन और जीवन धन सभी कुछ हो समर्पण।
राष्ट्र-हित की साधना में हम करें सर्वस्व अर्पण।। ध्रु.।।

त्याग कर हम शेष जीवन की सुसंचित कामनाये।
ध्येय की अनुरूप जीवन हम सभी अपना बनाये।
पूर्ण विकसित शुद्ध जीवन पुष्प से हो राष्ट्र अर्चन।। १।।

यज्ञ हित हो पूर्ण आहुति, व्यक्तिगत संसार स्वाहा।
देश के कल्याण में हो, अतुल धन भण्डार स्वाहा।
कर सकें विचलित न किंचित मोह के ये कठिन बंधन।। २।।

हो रहा आव्हान तो फिर कौन असमंजस हमें है।
उच्चतम आदर्श जीवन प्राप्त युग-युग से हमें है।
हम ग्रहण कर ले पुनर् वह त्यागमय परिपूर्ण जीवन।। ३।।

९. जननी जगन् मात की

जननी जगन् मात की, प्रखर मातृभक्ति की,
सुप्त भावना जगाने हम चले।। ध्रु. ।।

सदैव से महान जो सदैव ही महान हो,
कोटि-कोटि कंठ से अखण्ड वंद्य गान हो
मातृ-भू की अमरता, समृद्धि और अखण्डता की,
शुभ्र कामना जगाने हम चले।। १ ।।

एक माँ के पूत एक धर्म एक देश है,
फिर भी प्रेम के स्थान ईर्ष्या और द्वेष है,
सुबन्धुता व स्नेह की, सुकार्य और सुध्येय की,
स्वच्छ भावना जगाने हम चले।। २ ।।

प्रान्त-भेद भाषा-भेद भेद भी अनेक हैं,
छिद्र-छिद्र राष्ट्र का शरीर देख खेद है,
अनेकता व भेदता से एकता अभेदता की
श्रेष्ठ भावना जगाने हम चले।। ३ ।।

व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय समष्टि भाव को जगा,
सकामता व स्वार्थता के हेय भाव को मिटा,
परहितों सुखों में निज के हित-सुखों को देखने की
श्रेष्ठ चाह को जगाने हम चले।। ४ ।।

१०. बने हम हिंद के योगी...

बने हम हिंद के योगी, धरेंगे ध्यान भारत का
उठाकर धर्म का झंडा, करेंगे मान भारत का।। ध्रु.।।
गले में शील की माला, पहनकर ज्ञान की कफनी
उठाकर त्याग का डंडा, करेंगे मान भारत का।। १।।
जलाकर कष्ट की होली, उठाकर इष्ट की झोली
जमा कर संत की टोली, करेंगे मान भारत का।। २।।
स्वरों में तान भारत की, है मुख में आन भारत की
नसों में रक्त भारत का, नयन में मूर्ति भारत की।। ३।।
हमारे जन्म का सार्थक, हमारे स्वर्ग का कारण
हमारे मोक्ष का साधन, यही उत्थान भारत का।। ४।।

११. बलसागर भारत होवो

बलसागर भारत होवो, विश्वात शोभुनी राहो ।। ध्रु.।।
हे कंकण करि बांधियले, जनसेवे जीवन दिधले
राष्ट्रार्थ प्राण हे उरले, मी सिद्ध मरायाला हो...।। १।।
वैभवी देश चढवीन, सर्वस्व त्यास अर्पीन
तिमिर घोर संहारीन, या बंधु सहाय्याला हो...।। २।।
हातात हात घालून, हृदयास हृदय जोडून
ऐक्याचा मंत्र जपून, या कार्य करायाला हो... ।। ३।।
करि दिव्य पताका घेऊ, प्रिय भारत गीते गाऊ
विश्वात पराक्रम दावू, ही माय निजपदा लाहो...।। ४।।
या उठा, करू हो शर्थ, संपादु दिव्य पुरुषार्थ
हे जीवन ना तरी व्यर्थ, भाग्यसूर्य तळपत राहो... ।। ५।।
ही माय थोर होईल, वैभवे दिव्य शोभेल
जगतास शांति देईल, तो सोन्याचा दिन येवो...।। ६।।

१२. मातृ-भू की मूर्ति मेरे

मातृ-भू की मूर्ति मेरे हृदय मंदिर में विराजे।। ध्रु.।।

कोटि हिंदू हिंदवासी, मातृ मंदिर के पुजारी,
प्राण का दीपक संजोए, आरती माँ की उतारी
लक्ष्य के पथ पर बढे हम, स्वार्थ का स्वाभिमान त्यागे।। १।।

स्वर लहरियाँ उठ रही है, मातृ तव आराधना की
कोटि हृदयों में उठी है, चाह तेरी साधना की,
शंख ध्वनि संघोष करती, आज रण का साज साजे।। २।।

हाथ में हो अरुण केतु, और पावों में प्रभंजन,
शत्रु शोणित विजयश्री से, आज माँ का करें अर्चन,
विजयश्री का मुकुट फिर से मातृ मस्तक पर विराजे।। ३।।

१३. हम करें राष्ट्र-आराधन

हम करें राष्ट्र-आराधन तन से, मन से, धन से,
तन, मन, धन, जीवन से, हम करें राष्ट्र-आराधन।।ध्रु.।।

अन्तर से, मुख से, कृति से, निश्चल हो निर्मल मति से
श्रद्धा से, मस्तक नति से, हम करे राष्ट्र अभिवादन।।१।।

अपने हँसते शैशव से, अपने खिलते यौवन से,
प्रौढता पूर्ण जीवन से, हम करें राष्ट्र का अर्चन।।२।।

अपने अतीत को पढकर, अपना इतिहास उलटकर
अपना भवितव्य समझकर, हम करें राष्ट्र का चिन्तन।।३।।

है याद हमें युग-युग की, जलती अनेक घटनाएँ,
जो माँ की सेवा पथ पर, आयीं बनकर विपदाएँ।
हमने अभिषेक किया था, जननी का अरि-शोणित से,
हमने श्रृंगार किया था, माता का अरि-मुण्डों से,
हमने ही उसे दिया था, सांस्कृतिक उच्च सिंहासन
माँ जिस पर बैठी सुख से, करती थी जग का शासन,
अब कालचक्र की गति से, वह टूट गया सिंहासन
अपना तन मन धन देकर, हम करें पुनः संस्थापन।।४।।

१४. हिंदुभूमि की हम संतान

हिंदुभूमि की हम संतान, नित्य करेंगे उसका ध्यान
नील गगन में लहरायेंगे, भगवा अमर निशान ।। ध्रु. ।।

स्वार्थ छोड़कर सब अपना, माया ममता का सपना
नींद हमारी छोड़े हम, आगे कदम बढ़ायें हम
कदम-कदम पर हिलमिल गायें यह स्फूर्ति का गान ।। १ ।।

झगड़े छोड़े ऐक्य करें हम, धर्म संस्कृति नहिं भूलें हम
इतिहासों की साक्षी लें हम, नरवीरों का स्मरण करें हम
विपद् स्थिति से मातृभूमि का करना है, उत्थान ।। २ ।।

सेवा कार्य आसान नहीं है लेकिन डरना काम नहीं है
निशिदिन कष्ट उठाना है कार्यपूर्ति अब करना है
मातृभूमि का मान बढ़ाने, होना है बलिदान ।। ३ ।।

रामचंद्र की भूमि यही है, नंदलाल की भूमि यही है
क्षात्र धर्म का तेज यही है, मानवता का मूल यही है
देशभक्त और नरवीरों का प्यारा हिन्दुस्थान ।। ४ ।।

१५. आज एकदा पुन्हा सिंहनाद होऊ दे

आज एकदा पुन्हा सिंहनाद होउ दे
आज एकदा पुन्हा तुतारि भेरि वाजु दे ।। ध्रु.।।

उत्तरेस गर्जतो नगाधिराज सांगतो
आग अंतरि प्रचंड शत्रु मजसि वेढितो
मातृभूस रक्षिण्यास सैन्य सज्ज होउ दे ।। १।।

शासण्या मदांधता दशावतार जाहले
दुष्ट शक्ति मर्दुनी स्वधर्म सत्य रक्षिले
कोटि कोटि प्रार्थिती नवावतार होउ दे ।। २।।

आज राम कृष्ण आज रामदास जन्मु दे
आज भरत आज पार्थ शिव मनांत जागु दे
कुरुक्षेत्र भरत भू पुन्हा पुनीत होउ दे ।। ३।।

आज लागला सुरुंग पोखरीत ऐक्य तो
शौर्य, धैर्य, वीर्य, स्थैर्य, स्वास्थ्यची विनाशितो
सूर्यबिंब ग्रासण्यास राहु केतु सिद्ध ते ।। ४।।

आज स्वप्नभूमि कर्म धर्म भूमि होउ दे
सुषुप्तीतुनि जिवा शिवास जाग येउ दे
मोहपटल सारुनी दुरी तमास जाउ दे ।। ५।।

१६. एकदिलाची सिंहगर्जना

एकदिलाची सिंहगर्जना, दिशादिशातून घुमते रे
परचक्राची भीति कशाला? चक्र सुदर्शन फिरते रे ।। ध्रु. ।।

सोन्याची रे लंका जळली, रावण वधिला सीता सुटली
पतिव्रतेच्या शीलासाठी, रामायण हे घडते रे ।। १ ।।

सत्यासाठी पांडव लढले, जगावेगळे समर रंगले
महाभारती कृष्ण सारथी, युद्ध करा हे वदतो रे ।। २ ।।

रणी धुरंधर प्रताप राणा, अभिमानाचा त्याचा बाणा
आणि इमानी चेतक घोडा, अरिवरि तुटूनि पडतो रे ।। ३ ।।

सिंहगडावर सिंह झुंजला, पावन खिंडित बाजी लढला
झाशीवाली राणी आमुची, देशासाठी लढते रे ।। ४ ।।

त्याग असा रे अपूर्व अपुला, बलिदानाचा दिव्य सोहळा
भारतमाता कौतुक करते, ज्योत भक्तिची जळते रे ।। ५ ।।

अजिंक्य हिंदू अजेय भारत, अशी घोषणा नभास भेदित
हिमालयाच्या शिखरावरती, ध्वजा आमुची डुलते रे ।। ६ ।।

१७. जय जय महाराष्ट्र माझा...

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।। ध्रु. ।।

रेवा, वरदा, कृष्णाकोयना, भद्रा गोदावरी
एकमताचे भरती पाणी मातीच्या घागरी
भीमथडीच्या तट्टांना या यमुनेचे पाणी पाजा ।। १ ।।

काळ्या छातीवरी कोरली अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती खेळ जीवघेणी
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो शिवशंभूराजा
दरीदरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा ।। २ ।।

भीति न आम्हां तुझी मुळीही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानीला सुलतानीला जवाब देती जिभा
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला
निढळाच्या घामाने भिजला
देशरक्षणासाठी झिजला
दिल्लीचेही तख्त राखतो महाराष्ट्र माझा ।। ३ ।।

१८. जयोऽस्तुते

जयोऽस्तुते श्रीमहन्मंगले । शिवास्पदे शुभदे
स्वतंत्रते भगवती । त्वामहं यशोयुतां वंदे ।। ध्रु.।।

राष्ट्राचे चैतन्य मूर्त तू नीति संपदांची ।
स्वतंत्रते भगवती श्रीमती राज्ञी तू त्यांची ।
परवशतेच्या नभात तूचि आकाशी होशी ।
स्वतंत्रते भगवती । चांदणी चमचम लखलखशी ।। १।।

गालावरच्या कुसुमी किंवा कुसुमांच्या गाली ।
स्वतंत्रते भगवती तूच जी विलसतसे लाली
तू सूर्याचे तेज उदधिचे गांभीर्यही तूची
स्वतंत्रते भगवती । अन्यथा ग्रहण नष्ट तेची ।। २।।

मोक्ष मुक्ति ही तुझीच रूपे तुलाच वेदांती ।
स्वतंत्रते भगवती, योगिजन परब्रह्म वदती ।
जे जे उत्तम उदात्त उन्नत महन्मधुर ते ते ।
स्वतंत्रते भगवती । सर्व तव सहचारी होते ।। ३।।

हे अधम रक्तरंजिते । सुजन पूजिते । श्री स्वतंत्रते
तुजसाठी मरण ते जनन, तुजवीण जनन ते मरण
तुज सकल चराचर शरण
श्री स्वतंत्रते । श्री स्वतंत्रते । श्री स्वतंत्रते. ।। ४।।

१९. ए मेरे वतन के लोगो

ए मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी
जो शहीद हुए ह उनकी, जरा याद करो कुर्बानी।। ध्रु.।।

जब घायल हुवा हिमालय, खतरे में पड़ी आजादी
जब तक थी साँस लड़े वो, फिर अपनी; लाश बिछा दी
संगीन पे धर कर माथा, सो गए अमर बलिदानी ।। १।।

जब देश में थी दिवाली, वो खेल रहे थे होली
जब हम बैठे थे घरो में, वो झेल रहे थे गोली
थे धन्य जवान वो अपने, थी धन्य वो उनकी जवानी ।। २।।

कोई सिख कोई जाट मराठा, कोई गुरखा कोई मदरासी
सरहद पे मरनेवाले हर वीर थे भारतवासी
जो खून गिरा पर्वत पर, वो खून था हिंदुस्तानी ।। ३।।
जय हिन्द जय हिन्द की सेना
जय हिन्द जय हिन्द !!!

२०. ए वतन ए वतन...

ए वतन ए वतन, हमको तेरी कसम,
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जायेंगे
फूल क्या चीज है, तेरे कदमों पे हम,
भेट अपने सरों की चढा जायेंगे ।। ध्रु. ।।

कोई पंजाब से कोई महाराष्ट्र से,
कोई यू.पी.से है कोई बंगाल से
तेरी पूजा की थाली में लाये है हम,
फूल हर रंग के आज हर डाली से
नाम कुछ भी सही पर लगन एक है,
ज्योत से ज्योत दिल की जगा जायेंगे ।। १।।

हम रहे ना रहे इसका कुछ गम नही,
तेरी राहों को रौशन तो कर देंगे हम
खाक में मिल गई जिंदगी तो क्या,
माँग तेरी सितारों से भर देंगे हम
रंग अपने लहू का तुझे देके हम,
तेरी गुलशन की रौनक बढा जायेंगे ।। २।।

२१. गलत मत कदम उठाओ

गलत मत कदम उठाओ सोचकर चलो, विचार कर चलो
राह की मुसीबतों से प्यार कर चलो।। ध्रु. ।।

तुमपे जिम्मेदारीयाँ है मुल्क की पडी
तुम ना बदलो चाल अपनी हर घडी-घडी
तुमपे आनेवाले आशा की नजर पडी
चिराग ले चलो, आग ले चलो,
मस्तियों में रंग भरी फाग ले चलो।। १ ।।

रहो होशियार हमेशा न तुम डरो
दरिया आसमान पहाड़ों को सर करो
जहान की तरक्कियों के वास्ते मरो,
आवाज करेगा, साज करेगा
तुम्हारी वीरता पे जहाँ नाज करेगा।। २ ।।

दूर किनारे रहे, न मिले शिखर
मंजिल के मुसाफिर तुम्हे क्या राह की फिकर
चट्टान तू तूफान के झोकों की क्या फिकर,
अंधेरा जा रहा, दिन है कि आ रहा
वो कौन मंजिलो पे मंजिले उठा रहा।। ३ ।।

जिंदगी बेकार मरना इल्जाम है
काम मे लगे रहो यही आराम है
नही तो पानी भी पीना यहाँ हराम है
बुझो न बात में हो ध्येय साथ में
गिरे को उठाने की हो ताकद भी हाथ में।। ४ ।।

२२. गूँज उठी है हल्दी घाटी...

गूँज उठी है हल्दी घाटी... घोडों के इन टापों से
वीरों की ये सेना लेकर... राणा लढता मुघलों से
हाथी पे सलीम है... चेतक पे राणा है
हाथों में भाला है... आँखो में ज्वाला है
देखो चेतक हाथी के... मस्तक पर चढ़ गया
टपटप टपटप टपटप टपटप...
टपटप टपटप शूऽऽऽऽर

२३. जाग उठा है आज देश का....

जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान
प्राची की चंचल किरणों पर आया स्वर्ण विहान ।। ध्रु. ।।

स्वर्णप्रभात खिला घर-घर में जागे सोये वीर
युदध्स्थल में सज्जित होकर बढे आज रणधीर
आज पुनः स्वीकार किया है असुरों का आव्हान ।। १।।

सहकर अत्याचार युगों से स्वाभिमान फिर जागा
दूर हुआ अज्ञान पार्थ का धनुषबाण फिर जागा
पांचजन्य ने आज सुनाया संस्कृती का जयगान ।। २।।

जाग उठी है वानरसेना जाग उठा वनवासी
चला उदधि को आज बाँधने ईश्वर का विश्वासी
दानव की लंकापर फिरसे होता है अभियान ।। ३।।

खुला शंभू का नेत्र आज फिर वह प्रलयंकर जागा
तांडव की वह लपटे जागी वह शिवशंकर जागा
तालताल पर होता जाता पापों का अवसान ।। ४।।

ऊपर हिम से ढ़की खड़ी है वे पर्वत मालाएँ
सुलग रही है भीतर-भीतर प्रलयंकर ज्वालाएँ
उन लपटों में दीख रहा है भारत का उत्थान ।। ५।।

२४. नौजवान आओ रे

नौजवान आओ रे ! नौजवान गाओ रे ।
लो कदम मिलाओ रे, लो कदम बढाओ रे... ।। ध्रु.।।

ऐ वतन के नौजवान, इस चमन के बागबान ।
एक साथ बढ चलो, मुश्किलों से लड चलो ।
इस महान देश को नया बनाओ रे,... ।। १।।

धर्म की दुहाइयाँ, प्रान्त की जुदाईयाँ,
भाषा की लडाइयाँ, पाट दो ये खाइयाँ ।
एक माँ के लाल, एक निशां उठाओ रे... ।। २ ।।

एक बनो, नेक बनो, खुद की भाग्यरेखा बनो ।
सद्‌गुणों के तुम्ही हो लाल, तुम से ये जगत निहाल ।
शांती के लिए जहाँ को तुम जगाओ रे... ।। ३ ।।

माँ निहारती तुम्हे, माँ पुकारती तुम्हें
श्रम के गीत गाते जाओ, हँसते मुस्कराते जाओ ।
कोटी कंठ एकता के गान गाओ रे... ।। ४ ।।

२५. मेरा रंग दे बसंती

बडा ही गहरा दाग है यारो जिसका गुलामी नाम है
उसका जीना भी क्या जीना जिसका देश गुलाम है
सीने में जो दिल था यारो आज बना इक शोला...।। १।।

मेरा रंग दे बसंती चोला... ओ मेरा रंग दे...
ओ मेरा रंग दे बसंती चोला होय रंग दे बसंती चोला
माहे रंग दे बसंती चोला ।। ध्रु.।।

दम निकले इस देश की खातिर बस इतना अरमान है
एक बार इस राह पे मरना सौ जन्मों के समान है
देख के वीरों की कुर्बानी अपना दिल भी बोला ...।। २।।

जिस चोले को पहन शिवाजी खेले अपनी जान पे
जिसे पहन झाँसी की रानी मिट गई अपनी आन पे
आज उसीको पहन के निकला हम मस्तों का टोला...।। ३।।

२६. यशाने दुमदुमवू त्रिभुवने

यशाने दुमदुमवू त्रिभुवने ।।ध्रु. ।।

सकल भेद भारती मिटावे, अभिमाने हे राष्ट्र उठावे
आकांक्षांनी अशा आमुची संचरलेली मने।। १ ।।

कर्तृत्वाच्या विश्वासावर सदैव आम्ही राहू निर्भर
नैराश्याचे ऐकु न येईल यापुढती तुणतुणे।। २ ।।

मन का दुबळे उदास व्हाया? लोह असे का मन गंजाया?
का भीषण त्या मुशीत सोने ठरते हिणकस उणे।।३ ।।

वाळूवरती मीन तडफडे तसेच अमुचे जीवन उघडे
ध्येयसागरी विहरू अथवा क्षणी संपवू जिणे।। ४ ।।

संकल्पाच्या सिद्धीवाचुन थांबू आम्ही एकहि न क्षण
नेत्याच्या त्या अधीन केवळ अमुची ही जीवने।। ५ ।।

धीर वृत्तीचा उंच हिमालय भीषणतेतही निर्भय निश्चल
नेता ऐसा मिळे अम्हाला काय असे मग उणे।। ६ ।।

२७. ये देश हैं वीर जवानों का

ये देश हैं वीर जवानों का
अलबेलो का मस्तानों का
इस देश का यारों क्या कहना
ये देश है दुनिया का गहना।। ध्रु. ।।

यहाँ चौड़ी छाती वीरों की
यहाँ भोली शक्ले हीरों की
यहां गाते हैं रांझे मस्ती में
मस्ती है झूमे बस्ती में।। १।।

पेड़ों पे बहारें झूलों की
राहो में कतारें फूलों की
यहाँ हँसता है सावन बालों में
खिलती है कलियाँ गालों में ।। २।।

काहिल दंगल सुर्ख जवानों के
कहीं करतब तीर कमानों के
यहाँ नित नित मेले सजते हैं
नित ढोल और ताशे बजते हैं।। ३।।

दिलबर के लिए दिलदार हैं हम
दुश्मन के लिए तलवार हैं हम
मदान में अगर हम डट जाए
मुश्किल है के पीछे हट जाएँ ।। ४।।

(काहिल = आळशी, सुर्ख = लाल)

२८. ये वक्त की आवाज है

ये वक्त की आवाज है मिल के चलो,
जिन्दगी का राज है मिल के चलो,
मिल के चलो, मिलके के चलो, मिल के चलो ।। ध्रु.।।

आज दिल की रंजिशे मिटा के आओ,
आज भेद-भाव सब भुला के आओ,
आजादी से है प्यार जिन्हें देश से है प्रेम,
कदम से कदम और दिल से दिल मिला के आओ ।। १।।

जैसे सुर से सुर मिले हो राग के,
जैसे शोले मिल के बढें आग के,
जिस तरह चिराग से जले चिराग,
वैसे चलो भेद तेरा मेरा त्याग के ।। २।।

२९. सुन गम के तराने...

सुन गम के तराने हाँ, हाँ, हाँ
सुन गम के तराने दिल दहलेंगे है पुरजोश कहानी
अगर याद न हो तो याद दिला दूँ तुमको याद पुरानी ।। ध्रु.।।

भारत के इक कोने में है राजपूताना हिस्सा
और राजपुताने के अंदर है चितोड़गड़ का हिस्सा
और वहाँ के राना भीमसिंग का दर्दभरा यह किस्सा
और चौदह हजारों हाँ, हाँ, हाँ
और चौदह हजारे जली रानिया पद्मावति महाराणी ।। १ ।।

और एक तो तुमने सुना ही होगा भय्या हलदी घाटी
चितौडगढ के वीरों ने लाशों से दी थी फांटी
और खून के कारण लाल हुअी थी वहाँ की सारी मिट्टी
और वीर शिवाजी हाँ, हाँ, हाँ
और वीर शिवाजी, राणा जैसे वीरों की कहानी ।। २ ।।

और एक तो तुमने सुनाही होगा दो बच्चे चढे दिये दीवार
और चुनते चुनते गर्दन तक जब आ पहुँची दीवार
और सुनो, तुम्हारी जान बचाओ, इस्लाम करो स्वीकार
उनके मुँह से हाँ ना निकली, साफ साफ कर दिया इन्कार
और धर्म बराबर हाँ, हाँ, हाँ
धर्म बराबर कुछ भी नही है धन दौलत जिंदगानी ।। ३ ।।

और एक तो तुमने सुनाही होगा भगतसिंग लाखानी
और देश के खातिर बस उन्होंने कर दी थी कुर्बानी
और लुटा दियी थी हाँ, हाँ, हाँ
और लुटा दियी थी देश के खातिर प्यारी मस्त जवानी ।। ४ ।।

(पुरजोश = जोशपूर्ण)

३०. छत्रपती शिवरायांचा...

छत्रपती शिवरायांचा त्रिवार जयजयकार ।। ध्रु. ।।

हिंदवी स्वराज्याचे तोरण, बांधुनि गाजवी रणसमरांगण
आई भवानी प्रसन्न होऊन, देई साक्षात्कार ।। १ ।।

धर्माचा अभिमानी राजा, देशाचा संरक्षक राजा
चारित्र्याचा पालक राजा, घडवी देशोद्धार।। २ ।।

स्फूर्तिकेंद्र हे भारतियांचे, दैवत आम्हा नव तरुणांचे
आद्य प्रवर्तक संघटनेचे, सदा विजयी होणार।। ३ ।।

पूजा बांधू सामर्थ्याची, इच्छापूर्ती श्री शिवबाची
उठता उर्मी समर्पणाची, काय उणे पडणार।। ४ ।।

रात्र भयानक ही वैऱ्याची, जाणीव ठेवा कर्तव्याची
घेऊ प्रतिज्ञा एकजुटीची, नको आता माघार।। ५ ।।

३१. दुंदुभी निनादल्या

दुदंभी निनादल्या, नौबती कडाडल्या, दशदिशा थरारल्या
केसरी गुहेसमीप मत्त हत्ती चालला ।। ध्रु.।।

वाकुनी आदिलशहास कुर्निसात देऊनी
प्रलयकाळ तो प्रचंड खान निघे तेथुनी
हादरली धरणी व्योम शेषही शहारला ।। १।।

खान चालला पुढे, अफाट सैन्य मागुनी
उंट हत्ती पालख्याही रांग लांब लांब ही
टोळ धाड ती निघे स्वतंत्रता गिळावया ।। २।।

तुळजापूरची भवानी माय महन्मंगला
राऊळात अधमखान दैत्यासह पोचला
मूर्ती भंगली मनात चित्रगुप्त हासला ।। ३।।

श्रवणी तप्त तैलसे शिवास वृत्त पोचले
रक्त तापले कराल खड्ग सिद्ध जाहले
मर्दण्यास कालियास कृष्ण सिद्ध जाहला ।। ४।।

सावधान हो शिवा वैऱ्याची रात्र ही
काळ येतसे समीप साध तूच वेळ ही
लावून टिळा कपाळि तोषवी भवानिला ।। ५।।
केसरी गुहेसमीप मत्त हत्ती मारिला

३२. प्रभो शिवाजी राजा !

हे हिन्दुशक्तिसंभूत दीप्तितम तेजा
हे हिन्दु तपस्यापूत ईश्वरी ओजा
हे हिन्दुश्री सौभाग्यभूतिच्या साजा
हे हिन्दु नृसिंहा प्रभो शिवाजी राजा।।ध्रु.।।

करि हिन्दुराष्ट्र हे तू ते – वंदना
करि अंत:करण तुज – अभिनंदना
तव चरणी भक्तीच्या चर्ची – चंदना
गूढाशा पुरवी त्या न कथू शकतो ज्या।।१।।

जी शुद्धि हृदाची रामदास शिर डुलवी
जी बुद्धि पाच शाह्यांस शत्रूच्या झुलवी
जी युक्ति कूटनीतीत खलासी बुडवी
जी शक्ति बलोन्मत्तास पदतली तुडवी।।२।।

ती शुद्धि हे तुझ्या कर्मी राहू दे
ती बुद्धि भाबड्या जीवा लाभू दे
ती शक्ति शोणितामाजी वाहू दे
दे मंत्र पुन्हा तो दिला समर्थे तुज ज्या।।३।।

३३. रणी फडकती...

रणी फडकती लाखो झेंडे अरुणाचा अवतार महा
विजयश्रीला श्रीविष्णूपरी भगवा झेंडा एकचि हा ।। ध्रु.।।

शिवरायाच्या दृढ वज्राची सह्याद्रीच्या हृदयाची
दर्या खवळे तिळभर न ढळे कणखर काठी झेंड्याची
तलवारीच्या धारेवरती पंचप्राणा नाचविता
पाश पटापट तुटती त्याचे खेळे पट झेंड्यावरचा
लीलेने खंजीर खुपसता मोहक मायेच्या हृदयी
अखंड रुधिरांच्या धारांनी ध्वज सगळा भगवा होई
अधर्म लाथेने तुडवी,
धर्माला गगनी चढती
राम रणांगणी मग दावी ।। १।।

कधी न केले निजमुख काळे पाठ दाउनी शत्रूला
कृष्णकारणी क्षणही न रणी धर्माचा हा ध्वज दिसला
चोच मारण्या परव्रणावर काकापरि नच फडफडला
जणू जटायू रावणमार्गी उलट रणांगणि हा दिसला
परलक्ष्मीला पळवायाला पळभर पदर न हा पसरे
श्वासाश्वासासह सत्याचे संचरती जगती वारे
गगनमंदिरी धाव करी,
मलिन मृत्तिका लव न धरी
नगराजाचा गर्व हरी ।। २ ।।

मुरारबाजी करि कारंजी पुरंदरावर रुधिरांची
सुकली कुठली दौलत झाली धर्माच्या ध्वजराजाची
संभाजीच्या हृदयी खवळे राष्ट्रप्रेमाचे पाणी

अमर तयांच्या छटा झळकती निधड्या छातीची वाणी
खंडोजी कुरवंडी कन्या प्रेमे प्रभु चरणावरुनी
स्वामिभक्तिचे तेज अतुल ते चमकत राहे ध्वज गगनी
हे सिंहासन निष्ठेचे,
हे नंदनवन देवांचे
मूर्तिमंत हा हरि नाचे ।। ३ ।।

स्मशानातल्या दिव्य महाली निजनाथासह पतिव्रता
सौभाग्याची सीमा नुरली उजळायाला या जगता
रमामाधवा सवे पोचल्या गगनांतरि जळत्या ज्योती
चिन्मंगल ही चिता झळकते या भगव्या झेंड्यावरती
नसूनि असणे, मरूनि जगणे, राख होउनि पालवणे
जिवाभावाच्या जादूचे ध्वजराजाला हे लेणे
संसाराचा अंत इथे,
मोहाची क्षणि गाठ तुटे
धुके फिटे नवविश्व उठे ।। ४ ।।

ह्या झेंड्याचे हे आवाहन 'महादेव.... हर हर बोला.'
हर हर.... महादेव.
उठा मराठे अंधारावर घाव निशाणीचा घाला
वीज कडाडूनी पडता तरुवर कंपित हृदयांतरि होती
टक्कर देता पत्थर फुटती डोंगर मातीला मिळती
झंझावाता पोटी येऊनी पान हलेना हाताने
कलंक असला धुवुनि टाकणे शिवरायाच्या राष्ट्राने
घनचक्कर या युद्धात,
व्हा राष्ट्राचे राऊत
कर्तृत्वाचा द्या हात ।। ५ ।।

३४. रायगडाच्या माथ्यावरुनी

रायगडाच्या माथ्यावरुनी आज उठे ललकार
सिंहासनी शिवराय बैसले झाला जयजयकार
शिवाचा झाला जयजयकार ।। ध्रु.।।

संपला घोर अंधार घनदाट अमावास्येचा
स्वातंत्र्यसूर्य ये उदया अंबरी रंग आशेचा
जय महाराष्ट्र मातेचा, जय अभिमानी जनतेचा
जय बोला छत्रपतींचा
आकाशातून दहा दिशांतुन घुमला स्वर झंकार ।। १।।

नीतीच्या वेदीवरती शिवबाचे सिंहासन हे
शक्तीसह नांदे भक्ती न्यायाचे आश्वासन हे
विक्रमासव विनयाचे, विभवासव वैराग्याचे, स्थान राजयोग्याचे
आदर्शाचा अक्षय ठेवा सत्याचा सत्कार ।। २।।

चांदवा निळ्या गगनाचा नक्षत्रमण्यांनी सजला
अवकाश विश्वसदनाचा आनंदघनानी भिजला
हे स्वर्गसुखाचे पर्व, तोम् तनन् गाती गंधर्व
धरी ताल विश्व सर्व, कोटी कोटी कंठातुन उसळे, हृदयाचा हुंकार ।।३।।

नभी वाजे मृदुंग, जन हर्षात दंग, उठे तालतरंग लाख हृदयातुनी
त्याच्या कीर्तीचा रंग, सदा राही अभंग
गुण गाण्यात गुंग झाले सारे गुणी
शिवरायांचा जय मिळे आम्हा अभय
सर्व पृथ्वी उभय त्याच्या पुढे उभी
शिवरायाचे नाम हे आमुचे इनाम, इथे सारे तमाम हिंददेशातुनी।।४।।

३५. वेडात मराठें....

म्यानातून उसळे तलवारीची पात,
वेडात मराठे वीर दौडले सात ।। ध्रु. ।।

ते फिरता बाजूस डोळे, किंचित ओले,
सरदार सहा सरसावून उठले शेले
रिकीबींत टाकले पाय झेलले भाले,
उसळले धुळींचे मेघ सात निमिषांत ।।१ ।।

आश्चर्यमुग्ध टाकून मागुती सेना,
अपमान बुझविण्या सात अर्पुनी माना
छावणीत शिरले थेट भेट गनिमांना,
कोसळल्या उल्का जळत सात दर्यात ।।२ ।।

खालून आग वर आग, आग बाजूंनी,
समशेर उसळली सहस्त्र क्रूर इमानी
गर्दीत लोपले सात जीव ते मानी,
खग सात जळाले अभिमानी वणव्यात ।।३ ।।

दगडावर दिसतील अजुनी येथल्या टाचा,
ओढ्यात तरंगे अजुनी रंग रक्ताचा
क्षितिजावर उठतो अजुनी मेघ मातीचा,
अद्याप विराणी कुणि वाऱ्यावर गात ।।४ ।।

३६. शिवबाचे गोंधळी...

गोंधळी, गोंधळी अन् आम्ही शिवबाचे गोंधळी
उदे गं अंबे उदे, उदे भवानी उदे।। ध्रु.।।
आमराईतून आंबा उचलला होता दादोजीनं
देशाची संपत्ती चुकून आणली हो उचलून
कठोर शिक्षा थोरांनाही झाली शिवकालीन
अर्धी बाही कापून केले नियमांचे पालन
न्याय कसोटी समान होती ऽऽऽऽ
पटतंय का मंडळी अन् आम्ही शिवबाचे गोंधळी।। १।।
कल्याणी खजिन्यासह लुटली सुभेदाराची सून
नजराणा समजून आणली अबला आबाजीनं
वार्ता कळता संतापाने लाल झाले राजन
परनारी तर मातेसमान धर्माची शिकवण
चारित्र्याचा महामेरू हा ऽऽऽऽ पटतंय का मंडळी ।। २।।
चहूबाजूंनी यवनी सत्ता आप्त होते दुष्मन
सोपे नव्हते त्या काळामधे स्वराज्य संस्थापन
परकीयांना धूळ चारणे – हिंदूंचे रक्षण
अन् भारतभूच्या परंपरेचे संस्कृति संवर्धन
शिवपराक्रम अजोड होता ऽऽऽ पटतंय का मंडळी ।। ३।।
संघटित सामर्थ्यावरती लोळविला दुष्मन
राज्य हिंदवी स्थापन केले भगवा ध्वज उभारून
प्रजाजनांच्या उन्नतिसाठी चालविले शासन
लोकहिताच्या रक्षणासाठी चालविले शासन
अन् कार्य अपुरे पूर्ण कराया सिद्ध होऊ आपण
शिवराय हा आदर्श अमुचा ऽऽऽ पटतंय काय मंडळी ।। ४।।

३७. शूर अम्ही सरदार....

शूर अम्ही सरदार अम्हाला काय कुणाची भीती
देव, देश अन् धर्मापायी प्राण घेतलं हाती ।। ध्रु. ।।

आईच्या गर्भात उमगली झुंजाराची रीत
तलवारीशी लगीन लागलं जडली येडी प्रीत
लाख संकटे झेलून घेईल अशी पहाडी छाती ।। १ ।।

जिंकावं वा लढून मरावं हेच अम्हाला ठावं
लढुन मरावं मरून जगावं हेच आम्हाला ठावं
देशासाठी सारी विसरु माया ममता नाती ।। २ ।।

३८. अब तक सुमनों पर चलते थे...

अब तक सुमनों पर चलते थे । अब काँटो पर चलना सीखें।। ध्रु. ।।

खडा हुआ है अटल हिमालय, दृढता का नित पाठ पढाता;
बहो निरन्तर ध्येय- सिन्धु तक, सरिता का जल-कण बतलाता;
अपने दृढ निश्चय से पथ की बाधाओं को ढहना सीखें।। १ ।।

अपनी रक्षा आप करे जो, देता उसका साथ विधाता;
अन्यों पर अवलंबित है जो, पग-पग पर वह ठोकर खाता;
जीवन का सिद्धान्त अमर है, उसपर हम नित चलना सीखें।। २ ।।

हममें चपला सी चंचलता, हममें मेघों का गर्जन है;
हममें पूर्ण चन्द्रमाचुम्बी, सिंधु तरंगों का नर्तन है;
सागर से गंभीर बनें हम, पवन समान मचलना सीखें ।। ३ ।।

उठे उठे अब अंधकारमय, जीवन-पथ आलोकित कर दे;
निबिड निशा के गहन तिमिर को, मिटा, आज जग ज्योतित कर दें,
तिल-तिल कर अस्तित्व मिटा दे, दीप शिखा सम जलना सीखें ।।४ ।।

३९. असार जीवित...

असार जीवित केवळ माया रडगाणे हे गाऊ नका
घेई झोपा तो नर मेला संशय याचा धरू नका।। ध्रु.।।

वस्तुस्थिती ही असार भासे परि अंतरि बहू सार असे
जाणुनिया हे निजकर्तव्ये मन लावुनिया करा असे
'मेलो म्हणजे मिळविली झाले' सार्थक न धरा मनी असे
'माती असशी मातित मिळशी' आत्म्याला हे लागू नसे
सुख दुःखाचे भोग भोगणे हा मुळि जीवित हेतू नसे
उद्या आजच्या पेक्षा काही पुढेच जाऊ करू असे
अपार विद्या काळ अल्प हा झरझर कैसा चालतसे
शूर छातिचे कितिहि असाना हळु हळु मृत्यू गाठितसे
अफाट ऐशा विश्वरणांगणि जीवित युद्धचि चालतसे
त्यात लढोनि बहुधीराने नाव गाजवा शूर असे
'मुकी बिचारी कुणी हाका', अशी मेंढरे बनू नका,
गतकालाचा शोक फुका
पुढचा भासो कितिहि सुखाचा काळ भरवसा ठेवू नका।। १।।

जाते घडि ही अपुली साधा करा काय ते आता करा
चित्तामध्ये धैर्य धरा रे हरिवर ठेवा भाव पुरा
थोर महात्मे होऊनि गेले चरित्र त्यांचे पहा जरा
आपण त्यांच्या समान व्हावे हाचि सापडे बोध खरा
जग हे त्यजिता भवसागरिच्या वाळवंटीवर तरि जरा
चार पाऊले उमटवू अपुली हाच खुणेचा मार्ग बरा
जीवित सागर दुस्तर मोठा त्यातुनि जाण्या पैलतिरा
खटपट करितो गोते खातो निराश होऊनि जाय पुरा
अशा नराच्या दृष्टिस पडता तीच पाऊले जरा जरा
कोणि म्हणावे नाही म्हणूनि येईल त्याला धीर जरा
उठा उठा तर निजू नका, होईल कैसे म्हणू नका,
कशाही विघ्ना भिऊ नका
धीर धरी तो तरेल ऐसे, शिका शिका रे विसरू नका।। २।।

४०. असु अम्ही सुखाने

असु अम्ही सुखाने पत्थर पायातील
मंदीर उभविणे हेच आमुचे शील ।। ध्रु. ।।

आम्हास नको मुळी मान मरातब काही
कीर्तीची आम्हां चाड मुळीही नाही
सर्वस्व अर्पिले मातृभूमिचे ठायी
हे दैवत अमुचे ध्येय मंदिरातील ।। १।।

वृक्षांच्या शाखा उंच नभांतरि जावो
विश्रांति सुखाने विहगवृंद त घेवो
जरि देईल टकरा नाग बळाने देवो
करू अमर पाजुनि रस पाताळातील ।। २।।

जरि असेल ठरले देवत्वाप्रत जाणे
सोसून टाकिचे घाव बदलवू जिणे
गुणसुमने आम्ही विकसित करु यत्नाने
पावित्र्ये जीवन का न होई तेजाळ ।। ३।।

४१. अविरत श्रमणे

अविरत श्रमणे हेच जिणे, स्वप्नीही ध्येयपुनीत मने ।। ध्रु. ।।

ईश्वरे अर्पिली अमोल काया, विमुक्त व्हाया मन जिंकाया
गतवैभव अपुले मिळवाया, जागणे जना जागविणे ।। १ ।।

दुर्बलतेचा घाव जिव्हारी, शल्य तयाचे खुपे अंतरी
कृतिने कोरुनिया हेतु उरी, वागणे स्वये वागविणे ।। २ ।।

सदोदित मुखी अमृतवाणी, घे स्वजनांचे मन जिंकोनी
मृत ईर्ष्या फुलवी वचनांनी, बोलणे स्वये बोलविणे ।। ३ ।।

कर्णपथावर येतिल वार्ता, सुगम याहुनी सहस्त्र वाटा
निर्धार पुढती नच ढळता, चालणे दुजा चालविणे ।। ४ ।।

कार्यमग्नता फळ चिंतेचे, असंतोष हे बीज फळाचे
पुरवुनिया जल सहवासाचे, फुलविणे मळे बहरविणे ।। ५ ।।

राष्ट्रकारणी सर्व समर्पण, वीरव्रताचे करी आचरण
स्वार्थाचे सागर उल्लंघुन, ध्येयदेव नयनी बघणे ।। ६ ।।

४२. आम्ही भारतीय भगिनी

पिढ्यापिढ्यांच्या निर्भय आम्ही भारतीय भगिनी
घराघरांचे दुर्ग झुंजवू झुंजू समरांगणी ।। ध्रु. ।।

अष्टभुजेच्या वंशज आम्ही महिषासुर मारू
देवत्वाच्या गुड्या उभारू दानव संहारू
वलय होऊनी वज्र नांदते आमुच्या करकंकणी ।। १ ।।

रणधीरांच्या सन्निध आम्ही स्फूर्तीसह राहू
रथचक्राच्या आसाखाली घालू निजबाहू
घडवू रामायणे शत्रुचा मद उतरू रावणी ।। २ ।।

शस्त्र हि दिसते शोभून अमुच्या शोभिवंत हाती
भौम मातता चारू त्याला सैन्यासह माती
स्त्री हट्टाच्या थळे बहरवू स्वर्गसुखे अंगणी ।। ३ ।।

रणयागांतरी सर्वस्वाच्या आहुती टाकू
अभिमन्यूच्या बसू रथावर अश्वाते हाकू
सती उत्तरेपरी आवरू डोळ्यातिल पाणी ।। ४ ।।

जिजा, अहिल्या, झाशीवाली आमुचीच रूपे
सुतावतारे जितली युद्धे अमुच्या संतापे
आ शशितरणी स्वतंत्र राखू भारतीय धरणी ।। ५ ।।

(भौम = महिषासुर)

४३. कुणी कुणासंगं भांडायचं नाय...

सारखी लायकी नको बढायकी
कुणी कुणासंगं भांडायचं नाय
गावकित आमच्या ठरलंच हाय !।। ध्रु.।।

जमीन जुमला अन् गोठ्यातली गाय
कर्ज पाण्यापायी इकायची नाय !
मौजेत सुद्धा बाटली
आल्यागेल्यासंगं प्यायाची नाय ।। १ ।।

चोरी चहाडी नि वंगाळ पाप
शिकवू कुणाला नका मायबाप
भलं असावं भलं दिसावं
तमाशा जगाला दावायचा नाय ।। २ ।।

विठुरखुमाईच्या भक्तिशिवाय
गाऊन डोलून त्या भजनात काय !
भजनात एक अन् वागण्यात एक
असं वझ्याचं गाढव बनायचं नाय ।। ३ ।।

गावोगावी खेळ सुरूच हाय
तालमी बिगर गाव शोभायचं नाय ।
आपुल्याच गावात नांदायचं थाटात
भिऊनशान आता भागायचं नाय ।। ४ ।।

४४. क्यों हिंदुबहादुर भूल गये ?

निज वैभव को निज गौरव को, क्यों हिंदुबहादुर भूल गये?
उपदेश दिया जो गीता का, क्यों सुनना सुनाना भूल गये? ।।ध्रु.।।

रावण ने सिया चुरायी थी, हनुमान ने लंका जलायी थी
अब लाखो सिया हरी गयी, क्यों लंका जलाना भूल गये? ।।१।।

जब अर्जुन भ्रम से ग्रस्त हुआ, तब रण में गीताबोध किया
अब रास रचाना याद रहा, क्यों चक्र चलाना भूल गये?।। २।।

पट पांचाली का छुआ जिन्हें, वे हाथ जलाकर राख किये
अब लाखों आतंकित बहने, क्यों रक्षा करना भूल गये?।। ३।।

अब एक नहीं शत वृत्रासुर, घौरी-गजनी ने कपट किया
पर सुपुत्र हो तुम दधीचि के, क्यों वज्र बनाना भूल गये?।। ४।।

गुरुकन्या के मधुमोहन में, व्रतधारी वे कच अचल रहे
परदेस के भूलभूलैय्या में, क्यों निज जननीको भूल गये?।। ५।।

४५. जिसने मरना सीख लिया है

जिसने मरना सीख लिया है
जीने का अधिकार उसी को
जो काँटो के पथ पर आया
फूलों का उपहार उसी को ।। ध्रु.।।

जिसने गीत सजाए अपने
तलवारों के झन झन स्वर पर
जिसने विप्लव राग अलापे
रिमझिम गोली के वर्षण पर
जो बलिदानों का प्रेमी है
जगत का है प्यार उसीको ।।१ ।।

हँस हँस कर इक मस्ती लेकर
जिसने सीखा है बलि होना
अपनी पीडा पर मुस्काना
औरों के कष्टों पर रोना
जिसने सहना सीख लिया है
संकट है त्यौहार उसी को।।२ ।।

दुर्गमता लख बीहड पथ की
जो न कभी भी रुका कहीं पर
अनगिनती आघात सहे पर
जो न कभी भी झुका कहीं पर
झुका रहा है मस्तक अपना
यह सारा संसार उसी को।।३ ।।

(बीहड = उंचसखल)

४६. टाक रं जरा नजर

टाक रं जरा नजर दूरवर मैतरा
घे हा इशारा दे हा इशारा ।। ध्रु.।।

सजव तुझं असं सुरेख परडं
गोठ्यात गायं अन् अंगणात करडं
घाणीला रोगाला देऊ नको थारा ।। १ ।।

पुढल्या पिढीला तू शाळा शिकूदे
मानाने जगण्याचे करू दे धंदे
निराशा आळस करती पोबारा ।। २ ।।

तुझ्या कोठारात धान्याच्या राशी
गावात कोणी न राही उपाशी
मंगल ऐक्याचा झेंडा उभारा ।। ३ ।।

सौख्यात प्रेमात प्रसन्न सारं
साऱ्यांच्या हिताचं घुमू दे वारं
देशाच्या हाकेस हो सज्ज वीरा ।। ४ ।।

४७. निर्माणों के पावन युग में

निर्माणों के पावन युग में, हम चरित्र निर्माण न भूले।
स्वार्थ साधना की आँधी में, वसुधा का कल्याण न भूलें।। ध्रु.।।

माना अगम अगाध सिन्धु है; संघर्षों का पार नही है।
किन्तु डूबना मजधारों में, साहस को स्वीकार नही है
जटिल समस्या सुलझाने को, नूतन अनुसंधान न भुले।। १।।

शील विनय आदर्श श्रेष्ठता, तार बिना झंकार नही है।
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी? यदि नैतिक आधार नही है
कीर्ति कौमुदी की गरिमा में, संस्कृति का सम्मान न भूलें ।। २।।

आविष्कारों की कृतियों में, यदि मानव का प्यार नही है
सृजनहीन विज्ञान व्यर्थ है, प्राणी का उपकार नही है
भौतिकता के उत्थानों में, जीवन का उत्थान न भूलें।। ३ ।।

४८. मैं राष्ट्रमालिका का मोती

मैं राष्ट्रमालिका का मोती अगणित हूँ केवल एक नही ।। ध्रु. ।।

आयी अंतस्थल से पुकार। हिल उठा हृदय का तार तार।
मैं गद्‌गद् हो करता विचार। अहा! विशाल मेरा प्रसार।
मै महाजलधि का एक बिन्दु। मेरा अब व्यक्ति विवेक नहीं ।। १।।

जो मातृभूमि से ही पाया। वह लघुतम सा उपहार लिये।
माता के मंदिर में आया। अतुलित साहस संभार लिये।
कर चुका समर्पित राष्ट्रदेव। झोली में कुछ अवशेष नही ।। २।।

मैं महाजलधि का नाद घोर। अुठती प्रलयंकरसी हिलोर।
जगत्रस्त किंतु साहस बटोर। हम चले नाव ले क्षितिज ओर।
मैं राष्ट्रतरी का लघु नाविक। मन में चिंता का लेश नही ।। ३।।

उठ पडे आज हम हिंदु हिंदु। प्राणों की बलि ले बंधु बंधु।
राणा के पावन रक्त बिंदु। भुजबल विक्रम के अतुल सिंधु।
क्या इन हाथों फिर भारत माँ का। कर सकते हम अभिषेक नहीं ।।४।।

(हिलोर = लाट)

४९. हमारी ही मुठ्ठी में ...

हमारी ही मुठ्ठी में आकाश सारा
जब भी खुलेगी चमकेगा तारा,
कभी ना ढले जो वे ही सितारा
दिशा जिससे पहचाने संसार सारा ।। ध्रु. ।।

हथेली पे रेखाएँ है सब अधुरी,
किसने लिखी है नही जानना है।
सुलझाने इनको न आयेगा कोई,
समझना है इनको ये अपना करम है।
अपने करम से दिखाना है सबको,
खुद को पनपना उभरना है खुद को ।
सुलझा के खुद को मिटाये अंधेरा ।। १।।

हमारे पीछे कोई आये ना आये,
हमें ही तो पहले पहुँचना वहाँ है।
के जिनपर है चलना नयी पिढियों को,
उन्ही रास्तों को बनाना हमें है ।
कोई साथ आये उसे साथ ले ले,
अगर ना कोई साथ दे तो अकेले
अंधेरा मिटाये जो नन्हा शरारा ।।२।।

(शरारा = दुष्टावा)

५०. होंगे कामयाब

होंगे कामयाब, होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन।। ध्रु.।।

होगी शांति चारों ओर, होगी शांति चारों ओर
होगी शांति चारों ओर एक दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
होगी शांति चारों ओर एक दिन।। १।।

हम चलेंगे साथ-साथ, डाले हाथो में हाथ
हम चलेंगे साथ साथ एक दिन,
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम चलेंगे साथ साथ एक दिन ।। २।।

नही डर किसी का आज, नही भय किसी का आज
नही डर किसी का आज एक दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
नही डर किसी का आज के दिन।। ३।।

५१. हृदय चाहिए

हृदय चाहिए, हृदय चाहिए, हृदय चाहिए ।। ध्रु. ।।

जो बाधाओं से रुक न सके
जो दमनभार से झुक न सके
जो स्वयं सुलगकर ज्वाला बनकर
हृदय-हृदय में आग लगाता
मोहनिशा का तिमिर जलाता
अंगारो सा दहक रहा हो, भड़क रहा हो
रोमरोम में क्रांति मचाता, धड़क रहा हो
वह शौर्य चाहिए, शौर्य चाहिए, हृदय चाहिए ।। १ ।।

हृदय चाहिए, पर वह हृदय नहीं
जो मतवाले मधुभरे नयनों की मस्ती में
पागल सा हो कर जुट जाये।
हृदय चाहिए, वह हृदय नहीं
जो आँसू के सागर के क्रूर थपेडों में
दु:खों के झंझावातो से
उठती फेनिल की लहरों में
डूबे, उतराए, रो जाए।
हृदय चाहिए, वह हृदय नहीं
जो जगती की ज्वाला में
अपनी स्वाभाविक शोभा को तज दे।

झट रंग बदल जाए
लगते ही आँच पिघल जाए।
जो अग्निपरीक्षा सह न सके
लपटों मे जीवित रह न सके
जो भय से कुछ भी कर न सके।
हृदय चाहिए,
अरे मृत्यु से खेल खेलता
बाधाओं के गिरी ढकेलता
हृदय चाहिए, हृदय चाहिए।। २।।

हृदय चाहिए
बढ़-बढ़ कोरी बात नहीं
निर्वाचन की वह घात नहीं
रोटी कपडे का लालच भर
मजदूरों का नारा लेकर
गर्जन करते, तर्जन करते
कभी उछलते कभी मछलते
ऐसा नेता नही चाहिए
और नही सस्ते नारें।
अरे राष्ट्र की अमर भावना
सत्यसाधना ध्येय कामना
भरकर जीवन के अणु-अणु में
कण-कणका निज होम जलाता
ज्योति जगाता हृदय चाहिए ।। ३।।

हृदय चाहिए
रोटी कपडे नहीं चाहिए
धनिकों का धन नही चाहिए
सुख के सपने नही चाहिए
नही चाहिए
अरे हाथ का मैल सभी है।
आज राष्ट्र को हाथ चाहिए
और हाथ मे शक्ति चाहिए
शक्तिस्रोत वह हृदय चाहिए
हृदय चाहिए, हृदय चाहिए ।। ४।।

दीर्घ दास्य के दुष्प्रभाव से
मुक्त रहे जो हृदय चाहिए
मानवता की क्षुधा मिटाता
अमर तत्त्व का हृदय चाहिए
दलित जनों का अभय प्रदाता हृदय चाहिए
आर्त जनों की आर्ति मिटाता हृदय चाहिए
बंधु बंधु को हृदय लगाता हृदय चाहिए
हृदय चाहिए, हृदय चाहिए
हृदय हृदय को एक करे जो हृदय चाहिए ।। ५।।

52. There are numerous strings

There are numerous strings in your lute
Let me add my own among them.

Then when you smite your chord
My heart will break its silence
and my heart will be one with your smile

Amidst your numberless stars.
Let me place my own little lamp
In the dance of your festival of lights
My heart will throb
and my life will be one with your song.

५३. चल पडे पैर जिस ओर....

चल पडे पैर जिस ओर पथिक, उस पथ से फिर डरना कैसा?
यह रुक-रुक कर बढना कैसा?।।ध्रु.।।

होकर चलने को उद्यत तुम ना तोड सके बंधन घर के ।
सपने सुख वैभव के राही ना छोड सके अपने उर के ।
जब शोलों पर ही चलना है पग फूँक फूँक रखना कैसा ।। १।।

पहले ही तुम पहचान चुके यह पथ तो काँटो वाला है ।
पग-पग पर पडी शिलाएँ है कंकड मय काँटो वाला है ।
दुर्गम पथ अंधियारा छाया फिर मखमल का सपना कैसा ।। २।।

होता है प्रेम फकिरी से इस पथ पर चलने वालों को ।
पथ पर बिछ जाना पडता है इस पथ पर बढने वालों को ।
अपने सुख को खोने आकर यह सुख-दुःख का रोना कैसा? ।। ३।।

वह माल मलीदे दूर रहे रोटी के भी पडते लाले ।
मखमल रेशम के बदले में चिथडों से है पडते पाले ।
यह राह भिकारी बनने की सुख वैभव का सपना कैसा?।। ४ ।।

इस पथ पर बढने वालों को बढना ही है केवल आता ।
आती जो मग में बाधाएँ उनसे बस लढना ही आता ।
तुम भी जब चलते उस पथ पर फिर रुकना और झुकना कैसा ।। ५।।

५४. चिर विजय की कामना

चिर विजय की कामना ही राष्ट्र का आधार है।। ध्रु.।।

जागते यह भाव ले जब सुप्त मानव
भागते ह हारकर तब दुष्ट-दानव
विजय इच्छा चिर सनातन, नित्य-अभिनव
आज ही शत व्याधियों का श्रेष्ठतम उपचार है।।। १।।

शांत-चिर-गंभीर और जयिष्णु राघव
क्रांतिकारी सर्वगुण संपन्न माधव
कर सके जिस तत्त्व से अरि का पराभव
वह विजय की कामना ही राष्ट्र का आधार है।। २।।

दिया हमने छोड़ जब-जब चिर-विजय व्रत
हुए तब पददलित; पीडित और श्रीहत
छोड़ संभ्रम उसी पथ पर फिर बढ़े रथ
जहाँ बढ़ते जीत होती और रुकते हार है।। ३।।

हो यही दृढ़ भाव अपना श्रेष्ठतम धन
आत्म गरिमायुक्त होवे राष्ट्र-जीवन
संगठन की शक्ति का हो संघ दर्पण
निहित जिसमें राष्ट्र-पोषक भावना साकार है।। ४।।

५५. तू जिंदा है तो

तू जिंदा है तो जिंदगी की जीत पे यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर
तू जिंदा है..... ।। ध्रु. ।।

ये गम के और चार दिन सितम के और चार दिन
ये दिन भी जाएंगे गुजर गुजर गये हजार दिन, आ३ ओऽ३
कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार की नजर ।। १ ।।

सुबह के शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन, जमीन गा रही है कबसे झूम झूम कर, आ३ ओऽ३
तू आ मेरी सिंगार कर, तू आ मुझे हसीन कर ।। २ ।।

हजार वेष धरके आयी मौत तेरे द्वारपर
मगर तुझे न छू सकी चली गई वो हारकर
हर एक कदम के संग संग, मिले तुझे नयी उमर ।।३ ।।

नफरतों की ये गली, तू पार करले प्यार से
नाम लेके देश का, तू आगे बढना शान से
कभी न हार मानना, तू पार करले ये सफर ।।४ ।।

हमारे कारवाँ को मंझिलों का इन्तजार है
ये आँधियों के, बिज़लीयों के पीठ पर सवार है, आ३ ओऽ३
तू आ कदम मिला के चल, चलेंगे एक साथ हम
मुसिबतोंका सिर कुचल, चलेंगे साथ साथ हम ।। ५।।

५६. दिव्य ध्येय की ओर तपस्वी

दिव्य ध्येय की ओर तपस्वी,
जीवन भर अविचल चलता है।। ध्रु.।।

सज-धज कर आयें आकर्षण,
पग-पग पर झूमते प्रलोभन,
होकर सबसे विमुख बटोही,
पथ पर सँभल-सँभल बढता है।। १ ।।

अमर तत्त्व की अमिट साधना,
प्राणों में उत्सर्ग कामना,
जीवन का शाश्वत व्रत लेकर,
साधक हँस कण-कण गलता है ।। २।।

सफल-विफल और आस निराशा,
इसकी ओर कहाँ जिज्ञासा,
बीहडता में राह बनाता,
राही मचल-मचल चलता है।। ३ ।।

पतझड के झंझावातों में,
जग के घातों, प्रतिघातों में,
सुरभि लुटाता सुमन सिहरता,
निर्जनता में भी खिलता है।। ४ ।।

(बीहडता = बिकटतेत)

५७. ध्येयसाधना अमर रहे !

ध्येयसाधना अमर रहे !।।ध्रु.।।

अखिल जगत को पावन करती, त्रस्त उरोंमें आशा भरती
भारतीय सभ्यता सिखाती, गंगा की चिर धार बहे !।।१।।

इससे प्रेरित होकर जन-जन, करे निछावर निज तन मन धन
पाले देश-भक्ति का प्रिय प्रण, अडिग लाख आघात सहे !।।२।।

भीति न हमको छूने पाये, स्वार्थ-लालसा नहीं सताये
शुद्ध हृदय ले बढते जाये, धन्य धन्य जग आप कहें !।। ३।।

जीवन-पुष्प चढा चरणों पर, माँगे मातृभूमि से यह वर
तेरा वैभव अमर रहे माँ ! हम दिन चार रहें न रहे !।। ४।।

५८. नवीन पर्व के लिए...

नवीन पर्व के लिए, नवीन प्राण चाहिये ।। ध्रु.।।

स्वतंत्र देश हो गया, प्रभुत्वमय दिशा मही,
निशा कराल टल चली, स्वतंत्र माँ, विभामयी
मुक्त मातृभूमी को, नवीन मान चाहिये ।। १।।

चढ़ रहा निकेत है कि, स्वर्ग छू गया सरल
दिशा दिशा पुकारती कि, साधना करो सफल ।
मुक्त गीत हो रहा, नवीन राग चाहिये ।। २।।

युवक कमर कसो कि, कष्ट कंटकों की राह है,
प्राण-दान का समय, उमंग है उछाह है ।
पगों में आँधियाँ भरे, प्रयाण गान चाहिये ।। ३।।

५९. बढ रहे है हम निरन्तर

बढ रहे है हम निरन्तर चिर-विजय की कामना ले।। ध्रु.।।

पुष्प शय्या त्याग दी कर्तव्य-कंकण धार कर
कूद संगर में पडे हम धैर्य- धनु टंकारकर
दुष्ट-दानवता दमनहित काल का अवतार लेकर
अग्निपथ पर बढ रहे हम रुद्र सी हुंकार भरकर
प्रलयकारी हम प्रभंजन अमरता आराधना ले।। १।।

है जगाई सुखद हमने सुप्त-स्मृतियाँ चिर-पुरातन
है संजोई दुखद स्मृतियाँ चिर पुरातन नित्य नूतन
विगत वैभव के प्रदर्शन, दीनता के कटु निदर्शन
जय-पराजय, प्रगति-अवनति, सुखदुःखों का देख नर्तन
कर चुके प्रण विगत-वैभव-स्थापना की साधना ले।। २।।

हम चले जन-मन-कलुष का स्नेह से संहार करने
शुद्ध संस्कृति-स्त्रोत की अवरुद्धता का अन्त करने
सृजन वीणा के सुकोमल तार की झंकार करने
बन्धुओं के दग्ध उर में शान्ति का संचार करने
विकट पथ पर चल पडे ध्रुव ध्येय की सम्भावना ले।। ३।।

कर्म पथ पर इस प्रखर तर शूल भी है फूल भी है
अल्प जन अनुकूल है, पर सकडो प्रतिकूल भी है,
तालियों की टूट है, पर गालियाँ भरपूर इस पर,
संकटों के शैल शत-शत मोह- भ्रम के मूल भी है,
किन्तु सुख-दुख में सदा ही एकसी अभिनन्दना ले।। ४।।

प्रबल सरिता स्त्रोत को अवरुद्ध कब किसने किया है,
उत्ताल वारिधि-वीचियों को बाँध कब किसने दिया है,
प्रस्फुटित रवि-रश्मियाँ कब छिप सकी वारिद वनो में,
सफल साधक योगियों को मोह कब किसने लिया है,
हम सजग संभ्रम विपद की मोह की अवमानना ले।। ५ ।।

हम सहस्त्रों शीश, दृग, पग और हृद्, भुज दण्ड धारी,
किन्तु जन-जन में जगी है भावना एकात्मकारी,
शान्त हिमनग-श्रृंग से है, ज्वाल अंतर की जगाये,
प्रलयकारी है अहो पर, साथ ही नव-सृजनकारी,
अडिग-अविचल बन पुजारी मातृ-उर की वेदना ले।। ६ ।।

६०. मनसा सततं स्मरणीयम्

मनसा सततं स्मरणीयम् ।
वचसा सततं वदनीयम् ।
लोकहितं मम करणीयम् ।। ध्रु.।।

न भोगभवने रमणीयम् ।
न च सुखशयने शयनीयम्
अहर्निशं जागरणीयम् ...।। १।।

न जातु दुःखं गणनीयम् ।
न च निज सौख्यं मननीयम् ।
कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम् ...।। २।।

दुःख - सागरे तरणीयम् ।
कष्ट - पर्वते चरणीयम् ।
विपत्तिविपिने भ्रमणीयम् ....।। ३।।

गहनारण्ये घनांधकारे
बंधुजना ये स्थिता गह्वरे
तत्र मया संचरणीयम्...।। ४।।

६१. मुक्त प्राणों में हमारे

मुक्त प्राणों में हमारे देश का अभिमान जागे ।। ध्रु. ।।

हो गये साकार सपने, स्कन्ध पर अब भार अपने,
पापिणी तन्द्रा उदासी, कर्म का अवसान भागे ।। १।।

स्वार्थ-परता से विलग हो, त्याग-सिञ्चित ध्येय-मग हो,
देश पर ही शुभ मरण की प्राण ये पहचान माँगे ।। २।।

छोड मन की संकुचितता, भर हृदय में स्नेह ममता,
जन-जनार्दन का मधुरतम एक नव-सम्मान जागे ।। ३।।

बाँध कटि हों अब खडे हम, शक्ति-संग्रह कर बढें हम,
चल रहे बाधा हटाते भक्त के भगवान आगे ।। ४।।

६२. शपथ लेना तो सरल है

शपथ लेना तो सरल है, पर निभाना ही कठिन है।
साधना का पथ कठिन है, ।। ध्रु. ।।

शलभ बन जलना सरल है, प्रेम की जलती शिखा पर।
स्वयं को तिल-तिल जलाकर, दीप बनना ही कठिन है।। १।।

है अचेतन जो युगों से, लहर के अनुकूल बहते।
साथ बहना है सरल, प्रतिकूल बहना ही कठिन है।। २।।

ठोकरें खाकर नियति की, युगों से जी रहा मानव।
है सरल आँसू बहाना, मुस्कराना ही कठिन है।। ३।।

तप-तपस्या के सहारे, इन्द्र बनना तो सरल है।
स्वर्ग का ऐश्वर्य पाकर, मद भुलाना ही कठिन है।। ४।।

६३. साधना पथ पर बढे हम...

साधना पथ पर बढे हम, बन्धनों से प्रीती कैसी ।। ध्रु. ।।

हम शलभ जलने चले हैं, अस्तित्व निज खोने चले हैं।
दीप पर जलना हमें है, दाह से फिर भीति कैसी ।। १ ।।

सिन्धु से मिलने चले हैं, सर्वस्व निज देने चले हैं
अतल से मिलना हमें है, शून्य तट पर दृष्टी कैसी ।। २ ।।

दीप बन जलना हमें है, विश्व-तम तहना हमें है।
ध्येय तिल-तिल जलन का है, कालिमा से भीति कैसी ।। ३ ।।

बीज बन मिटने चले हैं, वृक्ष सम उगने चले हैं।
धर्म-ध्वज का स्तम्भ बनना, देह में अनुरक्ति कैसी ।। ४ ।।

आधार ही बनना हमें है, नीव में रहना हमें है।
ध्येय जब यह बन चुका है, कीर्ति में आसक्ति कैसी ।। ५ ।।

६४. सेवा है यज्ञकुंड...

सेवा है यज्ञकुंड समिधा सम हम जलें,
ध्येय महासागर में सरित रूप हम मिलें।। ध्रु.।।

सेवा है यज्ञकुंड समिधा सम हम जलें,
ध्येय महासागर में सरित रूप हम मिलें
लोकयोगक्षेम ही राष्ट्र अभयगान है,
सेवारत व्यक्ति, व्यक्ति कार्य का ही प्राण है।। १।।

उच्च नीच भेद भूल एक हम सभी रहें,
सहज बंधू भाव हो राग द्वेष ना रहें।
सर्व दिक् प्रकाश हो ज्ञान दीप बाँट दो,
चरण शीघ्र दृढ बढ़े ध्येय शिखर हम चढें।। २।।

मुस्कुराते खिल उठे मुकुल पात पात से,
लहर लहर सम उठे हर प्रघात घात में।
कृति निंदा लाभ लोभ यश विरक्ति चाव से
कर्म क्षेत्र में चले सहज स्नेह भाव से।। ३।।

दीन हीन सेवा ही परमेष्ठी अर्चना
केवल उपदेश नहीं कर्मरूप साधना
मन वाचा कर्म से सदैव एकरूप हो
शिव सुंदर नव समाज विश्ववंद्य हम गढ़े।। ४।।

६५. ॐ नमोऽस्तु ते ध्वजाय

ॐ नमोऽस्तुते ध्वजाय
सकल-भुवन-जनहिताय
विभवसहित विमलचरित
मंगलाय बोधकाय ते सततम्।
ॐ नमोऽस्तुते ध्वजाय

६६. इतनी शक्ती हमें देना दाता

इतनी शक्ती हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर होना,
हम चले नेक रस्तें पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना ।। ध्रु.।।

दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली जिन्दगी दे ।
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना ।। १।।

हर तरफ जुर्म है बेबसी है सहमा सहमासा हर आदमी है
पाप का बोझ बढता ही जाए जाने कैसी ये धरती थमी है
बोझ ममता से तू ये उठाले तेरी रचना का ही अंत हो ना।। २।।

हम न सोचे हमें क्या मिला है, हम ये सोचे किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बाँटे सभी को, सबका जीवन बन जाये मधुबन
अपनी करुणा का जल तू बहाँ के कर दे पावन हर एक मन का
कोना।।३।।

(सहमा = घाबरलेला)

६७. ए मालिक तेरे बंदे हम....

ए मालिक तेरे बंदे हम... ऐसे हो हमारे करम
नेकी पर चले और बदी से टले, ताकि हँसते हुए निकले
दम ।।ध्रु. ।।

बडा कमजोर है आदमी, अभी लाखो है इसमे कमी,
पर तू जो है खडा, है दयालू बडा
तेरी किरपा से धरती थमी,
दिया तूने हमें जब जनम, तू ही झेलेगा हम सबके गम ।। १ ।।

ये अन्धेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा
हो रहा बेखबर कुछ न आता नजर,
सुख का सूरज छिपा जा रहा
है तेरी रोशनी में वो दम, जो अमावस को कर दे पूनम ।। २ ।।

जब जुल्मों का हो सामना, तब तूहीं हमें थामना,
वो बुराई करें हम भलाई करे,
नही बदले की हो कामना,
बढ उठे प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का ये भरम ।। ३ ।।

६८. खरा तो एकचि धर्म

खरा तो एकचि धर्म। जगाला प्रेम अर्पावे।। ध्रु. ।।

जगी जे हीन अति पतित। जगी जे दीन पददलित ।।
तयां जाऊन उठवावे। जगाला प्रेम अर्पावे।। १।।

सदा जे आर्त अतिविकल । जयांना गांजती सकल ।।
तयां जाऊन हसवावे। जगाला प्रेम अर्पावे।। २।।

कुणा ना व्यर्थ शिणवावे । कुणा ना व्यर्थ हिणवावे ।।
समस्ता बंधु मानावे। जगाला प्रेम अर्पावे।। ३।।

प्रभूची लेकरे सारी । तयाला सर्वही प्यारी ।।
कुणा ना तुच्छ लेखावे। जगाला प्रेम अर्पावे।। ४।।

असे हे सार धर्माचे । असे हे सार सत्याचे ।।
परार्था प्राणही द्यावे। जगाला प्रेम अर्पावे ।। ५।।

६९. चराचराच्या सर्व शक्तिंनो

चराचराच्या सर्व शक्तिंनो, ही अमुची प्रार्थना
करा अम्हांला निर्भय, निर्मळ, उजळू द्या जीवना ।। ध्रु.।।

विद्येवर निष्ठा ठेवूया, उद्योगाची कास धरूया
साहस शिकवा, संयम शिकवा, घडवू द्या जीवना ।। १।।

नको कधी तो गर्व यशाचा, नको कधी आळस कामाचा
द्वेष कुणाचा नको कधीही, फुलवू सहजीवना ।। २।।

रक्षण करणे या सृष्टीचे, वाटे आम्हां अतिमोलाचे
समतेची आणिक ममतेची, द्या आम्हां प्रेरणा ।। ३।।

७०. जय शारदे वागीश्वरी

जय शारदे वागीश्वरी, विधिकन्यके विद्याधरी ।। ध्रु. ।।

ज्योत्स्नेपरी कांती तुझी, मुखरम्य शारद चंद्रमा
उजळे तुझ्या हास्यातुनी, चारी युगांची पौर्णिमा
तुझिया कृपेचे चांदणे, नित वर्षू दे अमुच्या शिरी
जय शारदे वागीश्वरी... ।। १ ।।

वीणेवरी फिरता तुझी, चतुरा कलामय अंगुली
संगीत जन्मा ये नवे, जडता मतीची भंगली
उन्मेष कल्पतरूवरी, बहरून आल्या मंजिरी
जय शारदे वागीश्वरी... ।। २ ।।

७१. तुझ्या घरी आलो राया...

तुझ्या घरी आलो राया, तुझ्या घरी आलो
कृतार्थ मी झालो राया, कृतार्थ मी झालो ।। ध्रु. ।।

तुझा घेतला मी छंद, तूच एक परमानन्द
बहर लुटाया स्वच्छंद, येथवरी आलो, राया ।। १ ।।

दोन डोळियांच्या आत, तुझी प्रकाशे सन्मूर्त
ध्यास लागुनि दिनरात, भेटण्यास आलो, राया ।। २ ।।

नाही मूठ रे पोह्यांची, नाही कणी विदुराघरची
नाही फळे त्या शबरीची, रिक्तहस्त आलो, राया ।। ३ ।।

तुझ्या घरी श्रीरामाचा, तुझ्या लाडक्या शिवबाचा
समारंभ सद्‌भक्तांचा, सजविण्यास आलो, राया ।। ४ ।।

वाचलीस भगवद्‌गीता, थोर तुकोबाची गाथा
मीहि धीट तुझिया गीता, गावयास आलो, राया ।। ५ ।।

ओवाळावी चरणी काया, शब्द तुझे जाति न वाया
हीच भावना जागवाया, इथे लीन झालो पाया ।। ६ ।।

तुला आवडी प्राणांची, शांत शुद्ध हृदयप्रेमाची
तूपवात या देहाची, लावण्यास आलो, राया ।। ७ ।।

हिंदुराष्ट्र पुरुषाराया, लीन तुझ्या झालो पाया
निर्माल्यचि व्हावी काया, म्हणुनिया भुकेलो, राया ।। ८ ।।

७२. देह मंदिर चित्त मंदिर

देह मंदिर चित्त मंदिर एक तेथे प्रार्थना
सत्य सुंदर मंगलाची नित्य हो आराधना ।। ध्रु. ।।

दु:खितांचे दु:ख जावो ही मनाची कामना
वेदना जाणावयाला जागवू संवेदना
दुर्बलाच्या रक्षणाला पौरुषाची साधना ।। १ ।।

जीवनी नवतेज राहो अंतरंगी भावना
सुंदराचा वेध लागो मानवाच्या जीवना
शौर्य लाभो, धैर्य लाभो, सत्यता संशोधना ।। २ ।।

भेद सारे मावळू द्या वैर साऱ्या वासना
मानवाच्या एकतेची पूर्ण होवो कल्पना
मुक्त आम्ही फक्त मानू, बंधुतेच्या बंधना ।। ३ ।।

७३. निर्वाणषट्क

मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तानि नाहम्
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
न च व्योमभूमिर् न तेजो न वायुः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ।। १ ।।

न च प्राणसंज्ञो न वै पञ्चवायुः
न वा सप्तधातुर् न वा पञ्चकोशाः ।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायू ।। २ ।।
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं...

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः ।। ३ ।।
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं...

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखम्
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः ।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता ।। ४ ।।
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं...

न मृत्युर् न शङ्का न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता न जन्म ।
न बन्धुर् न मित्रं गुरुर् नैव शिष्यः ।। ५ ।।
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं...

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणि ।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बंधः ।। ६ ।।
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं...

७४. मंदिर है ये हमारा...

सबके लिए खुला है मंदिर है ये हमारा ।
मत भेद को भुलाता मंदिर है ये हमारा ।। ध्रु.।।

आओ कोई भी पंथी आओ कोई भी धर्मी ।
देशी- विदेशीयों का मंदिर है ये हमारा ।। १।।

संतों की उच्च वाणी सब जन है भाई-भाई ।
सब देवता समाता मंदिर है ये हमारा ।। २।।

मतभेद होने पर भी मनभेद हो न पाएं ।
हर एकता का हामी मंदिर है ये हमारा ।। ३।।

मानव का धर्म क्या है मिलती है राह जिसमें ।
चाहता भला सभी का मंदिर है ये हमारा ।। ४।।

आओ सभी मिलेंगे बैठेंगे प्रार्थना में ।
तुकड्या कहे अमर है मंदिर है ये हमारा ।। ५।।

(हामी = सहाय्यक, समर्थन करणारा)

७५. वंदना के इन स्वरों में...

वंदना के इन स्वरों में, एक स्वर मेरा मिला लो ।। ध्रु.।।

श्रेष्ठ जीवन को न भूलो, राग में जब मस्त झूलो
अर्चना के रत्नकण में, एक कण मेरा मिला लो।। १।।

जब हृदय के तार बोले, शृंखला के बंध खोले
चढ़ रहे है शीश अगणित, एक सर मेरा चढा लो।। २।।

७६. शुद्धी दे, बुद्धि दे

शुद्धी दे बुद्धी दे हे दयाघना
शक्ती दे मुक्ती दे आमुच्या मना।। ध्रु.।।

तरतम ते उमजेना उमजेना सत्य
फसविते आम्हाला विश्व हे अनित्य
दिग्दर्शन मज व्हावे हीच कामना।। १।।

स्वत्वाला विसरून जर भ्रमले हे चित्त
ऋजुतेवर मात करी द्रोह हा प्रमत्त
निर्भयता जागावी हीच प्रार्थना।। २।।

७७. संगच्छध्वं संवदध्वम्

संगच्छध्वं संवदध्वम्
सं वो मनांसि जानताम्
देवा भागं यथा पूर्वे
सञ्जानाना उपासते।
समानी व आकूतिः
समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो
यथा वः सुसहासति।

७८. सर्वात्मका शिवसुंदरा

सर्वात्मका शिवसुंदरा, स्वीकार या अभिवादना
तिमिरातुनी तेजाकडे प्रभु आमच्या ने जीवना ।। ध्रु.।।

सुमनात तू गगनात तू, ताऱ्यामधे फुलतोस तू
सद्धर्म जे जगतामधे, सर्वात त्या वसतोस तू
चोहिकडे रूपे तुझी, जाणीव ही माझ्या मना ।। १।।

श्रमतोस तू शेतामधे, तू राबसी श्रमिकासवे
जे रंजले वा गांजले, पुसतोस त्यांची आसवे
स्वार्थाविना सेवा जिथे, तेथे तुझे पद पावना ।। २।।

न्यायार्थ जे लढती रणी, तलवार तू त्यांच्या करी
ध्येयार्थ जे तमि चालती, तू दीप त्यांच्या अंतरी
ज्ञानार्थ जे तपती मुनी, होतोस त्यांची साधना ।। ३।।

करुणाकरा करुणा तुझी, असता मला भय कोठले?
मार्गावरी पुढती सदा, पाहीन मी तव पावले
सृजनत्व या हृदयामध्ये, नित जागवी भीतीविना ।। ४।।

७९. हमको मन की शक्ति देना...

हमको मन की शक्ती देना, मन विजय करे
दूसरों की जय से पहले, खुद विजय करे ।। ध्रु. ।।

भेदभाव अपने दिल से साफ कर सके
दोस्तोंसे भूल हो वो माफ कर सके
झूठ से बचे रहे सच का दम भरे ।। १ ।।

मुश्किलें पडे तो हम पे इतना कर्म कर
साथ दे तो धर्म का चले तो धर्म पर
खुद से होसला रहे, बदी से ना डरे ।। २ ।।

(बदी = वद्य (पक्ष) = अंध:कार)

८०. हर देश में तू

हर देश में तू हर वेश में तू,
तेरे नाम अनेक तू एक ही है
तेरी रंगभूमी यहाँ विश्व भरा,
हर खेल में मेले में तू ही तू है।। ध्रु. ।।

मिट्टी से अणु परमाणु बना,
इस दिव्य जगत का रूप लिया।
कही पर्वत वृक्ष विशाल बना,
सादर्य तेरा तू एक ही है।। २ ।।

सागर से उठा बादल बनकर,
बादल से फूटा जल होकर।
कहीं नहर बना नदियाँ गहरी,
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।। १।।

यह दृश्य दिखाया है जिसने,
वह है गुरुदेव की पूर्ण दया।
तुकड्या कहे और तो कोई नही,
बस तू और म सब एक ही है।। ३ ।।

81. This is my prayer to Thee

This is my prayer to thee, my lord
strike, strike at the root of penury in my heart.

Give me the strength
lightly to bear my
joys and sorrows.

Give me the strength
to make my love
fruitful in service.

Give me the strength
never to disown the poor or
bend my knees before insolent might.

Give me the strength
to raise my mind high above daily trifles.
And give me the strength
to surrender my strength to thy will with love.

विविध सामाजिक संघटनांमधून अनेक कार्यकर्ते
समाजघडणीचं काम सातत्याने करत असतात.
समाजातल्या वेगवेगळ्या व्यक्तींना
आपल्या कामांशी जोडून घेताना
स्फूर्तिगीतांची मदत मिळते.
समूहात खड्या आवाजात गायल्या जाणाऱ्या
प्रेरणादायी गीतांमुळे
मनं आणि माणसं जोडली जातात.
कधी राष्ट्रगौरवाने उर भरून येतो.
तर कधी संकल्पांचे पुनर्स्मरण होत राहाते.
त्यातून संकल्प आणि ध्येये दृढ होतात.
काही गीते गाताना मुठी आवळल्या जातात
तर काही गीते म्हणताना प्रार्थनेसाठी हात जोडले जातात,
यातून पुढच्या कामाला गती मिळते.
सुंदर अर्थ आणि सुरेल चाली असणारी अनेक प्रबोधन गीते
विविध संघटनांमधून वेगवेगळ्या प्रसंगी म्हटली जातात.
हजारो युवक-युवतींनी ही गाणी गावीत, गुणगुणावीत,
त्यातील आशयानुसार ध्येयधुंद जगण्याचा प्रयत्न करावा,
या हेतूने प्रबोधन गीते भाग २ मध्ये
ज्ञान प्रबोधिनीतील कार्यकर्त्यांव्यतिरिक्त
अन्य व्यक्तींनी लिहिलेली गीते संकलित केली आहेत.
ही गीते सर्वांना प्रेरणादायक होतील अशी खात्री वाटते.

मूल्य ₹ ३०/-

संपर्क : छात्र प्रबोधन, ज्ञान प्रबोधिनी, ५१०, सदाशिव पेठ, पुणे ३०.